प्रकाशन तिथि : 01 जुलाई, 2023
प्रेषण तिथि : 04 जुलाई 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 08 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पांच शिविरों में 700 शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर के पश्चात प्रारंभ हुए नये सत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों की श्रृंखला प्रारंभ हो चुकी है जिसके तहत 13 से 20 जून की अवधि में विभिन्न स्थानों पर पांच प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुए जिनमें 700 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मध्यप्रदेश में रतलाम स्थित श्री सज्जन राजपूत बोर्डिंग में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 17 से 20 जून तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने शिविरार्थियों से कहा कि भगवान ने मनुष्य को श्रेष्ठतम कृति के रूप में बनाया है। हमारे पूर्व जन्म के संस्कार के अनुसार हमें उचित वर्ण प्राप्त होता है। प्रत्येक वर्ण को अपने अपने स्वधर्म के अनुसार जीवन

जीना चाहिए। भगवान ने हमें क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है तो हमें क्षत्रियत्व को धारण करके कष्ट सहिष्णु बनकर त्यागमय जीवन जीना चाहिए। उन्होंने कहा कि क्षत्रिय की महत्ता वर्तमान समय मे सबसे अधिक है क्योंकि आज सभी अपने कर्त्तव्य को भूलकर पतन की ओर जा रहे हैं। इस पतन को रोकने का दायित्व क्षत्रिय का ही है। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें इसके लिए तैयार कर रहा है। शिविर में क्षेत्र के 150 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के विदाई कार्यक्रम में रतलाम के स्थानीय समाजबंधु भी मौजूद रहे। यह रतलाम क्षेत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्रथम शिविर था एवं संघ की कार्यप्रणाली को देखकर स्थानीय समाजबंधु प्रभावित और उत्साहित हुए एवं क्षेत्र में बालिका शिविरों के आयोजन का भी आग्रह किया। विदाई कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली व प्रान्त प्रमुख गुमान सिंह वालाई भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। धर्मेन्द्र सिंह बागेरी, अजित सिंह बोरदिया व छात्रावास की प्रबंध कमेटी के सदस्यों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। राजसमंद जिले में लीलेरा स्थित श्री वैष्णो देवी धर्मशाला में भी इसी अवधि में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारडा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि यहां चार दिन में जिस प्रकार प्रकृति की परीक्षाओं के बीच भी आपने डटे रहने का अभ्यास किया है, उसी प्रकार हमें जीवन में आने वाली चुनौतियों में भी बिना विचलित हुए कर्त्तव्य मार्ग पर डटे रहना है। संघ हमें इस दृढ़ता का अभ्यास करवाता है। भारी बरसात के बीच संपन्न इस शिविर में उदयपुर, राजसमन्द, भीलवाड़ा, पाली, जोधपुर, जालोर, बीकानेर, नागौर, अजमेर आदि जिलों के 180 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

समारोह पूर्वक मनाई महाराजा हणवंत सिंह जी की जन्म शताब्दी

जोधपुर के पूर्व महाराजा हणवंत सिंह जी की सौवीं जयंती जोधपुर स्थित मेडिकल कॉलेज के सभागार में समारोहपूर्वक मनाई गई। श्री हणवंत एजुकेशनल सोसाइटी के तत्वाधान में 16 जून को आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि महाराजा हणवंत सिंह जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। राष्ट्रीयता की सोच को धारण करने वाले महाराजा ने शिक्षा के प्रसार के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने सदैव अपनी प्रजा के हितों को ही प्राथमिकता दी। ऐसे महापुरुषों के प्रति सभी देशवासियों को कृतज्ञ रहना चाहिए। पूर्व राज्यपाल वीपी सिंह बदनोर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महाराजा हणवंत

सिंह जी ने अपने छोटे से शासनकाल में कला, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा आदि को संरक्षण प्रदान करते हुए सदैव राष्ट्र सेवा में अपना योगदान दिया। पूर्व महाराजा गज सिंह ने कहा कि महाराजा हणवंत सिंह जी द्वारा प्रजाहित में किए गए कार्यों के कारण ही आज 100 वर्ष बाद भी उन्हें याद किया जा रहा है। जब देश का विभाजन हो रहा था, उन विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने सूझ-बूझ का परिचय देते हुए राज्य को संभाला और समस्त प्रलोभनों को ठुकरा कर भारत में अपने राज्य का विलय किया। लोकतंत्र की नई व्यवस्था में भी उन्होंने देश के प्रथम चुनावों में भाग लिया और अद्भुत सफलता प्राप्त की लेकिन दुर्भाग्य से इसी दौरान उनका विमान दुर्घटना में निधन हो गया। पूर्व केंद्रीय मंत्री चंद्रेश कुमारी, सांसद राजेंद्र गहलोत, समिति के अध्यक्ष शिव सिंह राठौड़ ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। जगत सिंह राठौड़ ने अतिथियों का स्वागत किया। महारानी हेमलता राजे, महंत प्रताप पुरी, विधायक सूर्यकांता व्यास, मेजर जनरल शेर सिंह, पूर्व सांसद डॉ. नारायण सिंह माणकलाव सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

कुसुमदेसर में सगत सिंह राठौड़ की प्रतिमा व स्मारक का लोकार्पण

1971 के भारत-पाक युद्ध में भारत की जीत के नायक रहे लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह राठौड़ की प्रतिमा व स्मारक का लोकार्पण समारोह उनके पैतृक गांव चुरू जिले के कुसुमदेसर में 24 जून को आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि जो देश के लिए लड़ते हैं, उनका सम्मान पूरा देश करता है। शहीदों के स्मारक तीर्थ स्थल के समान होते हैं, जहां जाकर हमें भी देश की सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने स्मारक के निर्माण के लिए पवन सिंह राठौड़ के प्रयासों की सराहना की। पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा ने कहा कि देश के वीर योद्धाओं के स्मारकों का हमें मंदिर की भांति सम्मान करना चाहिए। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

हड़मतिया

हिम्मतसिंह का गड़ा

सोलखुर्द

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त चूरू प्रान्त के रतनगढ़ मंडल के नुवां गांव में 18 जून को कार्यक्रम रखा गया। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक सुमेर सिंह गुढा ने उपस्थित समाजबंधुओं से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का दर्शन हमारे जीवन में उतरना आवश्यक है। इसके लिए हमें निरन्तर संघ के संपर्क में रहना चाहिये और संघ के संपर्क में रहने का साधन है शाखा व शिविर। अतः हमें शाखा लगानी चाहिये और संघ के शिविरों में जाना चाहिये। किशन सिंह गौरिसर ने पूज्य श्री तनसिंह जी की सौंवी जयंती पर दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए सभी को निमंत्रण दिया। कार्यक्रम में गिरवरसिंह जालेऊ, किशन सिंह गौरिसर, प्रदीप सिंह लुणासर, किशोर सिंह नुवां, भगवान सिंह नुवां, विजेंद्र सिंह नुवां सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। 25 जून को चूरू प्रान्त के रतनगढ़ मंडल के पायली गांव में भी ऐसा ही कार्यक्रम रखा गया।

पायली

अजमेर प्रांत में जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन 18 जून को सापुणदा गांव में पृथ्वी सिंह जी के रावले में किया गया। अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 25 जून को अजमेर प्रांत में विशेष साप्ताहिक शाखा चारभुजानाथ मन्दिर सोलखुर्द में आयोजित की गई जिसमें प्रांत के विभिन्न गांवों से संघ के कार्य में सक्रिय रूप से सहयोग देने वाले समाजबंधु उपस्थित रहे। प्रांत प्रमुख विजय राज सिंह जालिया सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 25 जून को वागड़ प्रांत की विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन गढ़ी तहसील के हिम्मत सिंह का गड़ा रावला परिसर में किया गया। गुमान सिंह वालाई द्वारा संघ परिचय व पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष की जानकारी दी गई। दिग्पाल सिंह हिम्मत सिंह का गड़ा ने भी अपने विचार रखे। इस दौरान संघ साहित्य व जन्म शताब्दी वर्ष हेतु तैयार की गई केसरिया पताकाएं वितरित की गई। जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त चित्तौड़गढ़ में श्री राम जानकी मंदिर कदमाली, निंबाहेड़ा में तथा रावला परिसर, पुराना हड़मतिया, भोपाल सागर में दो विशेष शाखाएं आयोजित की गई। पुराना हड़मतिया में वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने श्री क्षत्रिय युवक संघ व पूज्य तनसिंह जी का परिचय दिया। इस दौरान संघशक्ति, पथप्रेरक के सदस्य बनाने के साथ ही संघ साहित्य एवं शताब्दी वर्ष पताका भी उपलब्ध करवाई गई। कदमाली में जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा, लक्ष्मण सिंह भाटियों का खेड़ा, चंद्रवीर सिंह साजियाली,जीवन सिंह नरधारी आदि उपस्थित रहे।

सापुणदा

नूंवा

कदमाली

सूरत और भिंयाड़ में मनाया योग दिवस

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सूरत शहर के सारोली क्षेत्र के वीर अभिमन्यु उद्यान में श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा सामूहिक योगाभ्यास का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सूरत शहर में लगने वाली सभी शाखाओं के स्वयंसेवकों ने भाग लेकर योगाभ्यास किया। कार्यक्रम में ओमकार सिंह फुलिया ने 'योग का हमारे जीवन में महत्व' विषय पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि योग वर्तमान समय में तन-मन को स्वस्थ रखने का श्रेष्ठतम तरीका है। जबर सिंह भिंयाड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मातेश्वरी शिक्षण संस्थान भिंयाड़ में भी योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

बालोतरा संभाग की कार्ययोजना बैठक संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के बालोतरा संभाग की वार्षिक कार्ययोजना बैठक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक वीरसिंह इन्द्राणा के फार्म हाउस पर 13 जून को आयोजित हुई। यज्ञ व प्रार्थना से बैठक के प्रारंभ के पश्चात संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी ने बताया कि यह वर्ष श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। 28 जनवरी को उनकी 100वीं जयंती पर जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, दिल्ली में मुख्य समारोह होगा। कार्यक्रम की तैयारी हेतु जुलाई से जनवरी तक निरंतर चलने वाले अभियान में पूरे संभाग में संपर्क यात्राएं निकाली जाएगी। संभाग में 100 से अधिक महापुरुषों के जयंती कार्यक्रम एवं स्मरण दिवस कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। संघ के स्वयंसेवक गांव-गांव, घर-घर जाकर सभाएं एवं विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर जनसंपर्क करेंगे। इसके लिए सभी स्वयंसेवकों को विभिन्न प्रकार के दायित्व सौंपे गए। मुख्य समारोह के लिए राजस्थान भर से स्पेशल ट्रेनों द्वारा सभी लोग दिल्ली पहुंचेंगे, इसी कड़ी में बालोतरा संभाग से भी एक ट्रेन निश्चित की गई। बालोतरा संभाग को संघकार्य के विस्तार के लिए केन्द्रीय कार्यालय से पश्चिमी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र दिया गया है, उसके लिए भी स्वयंसेवकों को जिम्मेदारियां सौंपी गई। संभाग में वर्ष भर में लगने वाले शिविर व शाखाओं पर भी चर्चा हुई। कार्यक्रम में बालोतरा प्रांत प्रमुख चन्दनसिंह थोब, बायतु प्रांत प्रमुख मूलसिंह चान्देसरा व सिवाना प्रांत प्रमुख मनोहर सिंह सिणेर स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। बैठक के दौरान संघ के युवा स्वयंसेवक मनोहर सिंह नांदला, जिनका हाल ही में रेल दुर्घटना में स्वर्गवास हो गया था, को श्रद्धांजलि स्वरूप उपस्थित सभी स्वयंसेवकों द्वारा मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना भी की गई।

गांवड़ी (डीडवाना) में मनाई राव दूदाजी की जयंती

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त नागौर जिले में डीडवाना क्षेत्र के गांवड़ी गांव में मेड़तिया राठौड़ों के मूल पुरुष राव दूदा जी की जयंती 15 जून को समारोहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए इतिहासकार व पूर्व ब्लॉक शिक्षा अधिकारी संग्राम सिंह गिंगालिया ने मेड़तिया वंश का इतिहास बताते हुए कहा कि विश्नोई पंथ के संस्थापक जाम्भोजी की विशेष कृपा और आशीर्वाद मेड़तिया वंश पर रहा और राव दूदा जी ने अपने राज्यकाल मे सभी जातियों व वर्गों के साथ समन्वय बनाकर शासन किया।

उन्होंने राज्य की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था को इस प्रकार से विकसित किया कि उनके सुशासन में सभी जातियों के लोग प्रसन्नता व कुशलता से रहते थे। उन्होंने मारवाड़ में जल की समस्या का समाधान करते हुए जगह-जगह तालाब की व्यवस्था करवाई व कृषि के विकास के लिए भी उचित नीतियां लागू की। राव दूदा जी के बाद भी इस वंश मे वीरमदेव, जयमल राठौड़, मीरां बाई आदि महान व्यक्तित्व हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख शिम्भू सिंह आसरवा ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने समाज की पीड़ा को अपनी व्यक्तिगत पीड़ा मानते हुए संघ की स्थापना की जो अनवरत 76 वर्षों से शिविर, शाखा, स्नेह मिलन आदि विभिन्न माध्यमों से अपना कार्य कर रहा है। इसी कड़ी में हमारे महापुरुषों की जयंती भी समय-समय पर संघ द्वारा मनाई जाती है ताकि हम हमारे पूर्वजों के पदचिह्नों पर चलते हुए क्षात्रधर्म का पालन कर सकें। डीडवाना प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने दिल्ली में होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह की सूचना देते हुए सभी को दिल्ली पहुंचने और इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनने हेतु निमंत्रण दिया। श्याम प्रताप सिंह रूंआ ने सभी से संघ से जुडने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें हमारे महान पूर्वजों को स्मरण करते हुए सदैव त्याग और बलिदान के मार्ग को अपनाना चाहिए। डीडवाना राजपूत सभा अध्यक्ष रघुवीर सिंह चौमु ने कहा कि अपने पूर्वजों की स्मृति में हमें हर वर्ष इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करते रहना चाहिए जिससे हमारी युवा पीढ़ी उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभा सके। गायत्री राठौड़ ने कविता पाठ किया और कहा कि बालिकाओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुडना चाहिए। गांवड़ी के उम्मेदसिंह और भंवर सिंह ने पधारे सभी समाजबंधुओं का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन जय सिंह सागुबडी ने किया। स्थानीय समाजबंधुओं ने बड़ी संख्या में कार्यक्रम में सम्मिलित होकर राव दूदाजी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

बीकानेर में क्षत्रिय शिक्षक सम्मेलन संपन्न

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 18 जून को बीकानेर शहर स्थित महिला मंडल स्कूल में क्षत्रिय शिक्षक-शिक्षिकाओं का एकदिवसीय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें बीकानेर जिले के राजकीय एवं गैर राजकीय सेवा में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने कहा कि आज के अति कृत्रिमता के दौर में शिक्षक का दायित्व मात्र शिक्षा देना ही नहीं बल्कि राष्ट्र के नागरिक को राष्ट्रीय मूल्यों की शिक्षा देकर दीक्षित करना भी है। आजकल हम भूलवश शब्दों के उच्चारण से संबंधित त्रुटियां करते हैं जो हमारे स्वभाव में आ जाती है और इन्हीं त्रुटियों का अनुसरण हमारे छात्र भी करते हैं। इससे शिक्षा के संस्कार में त्रुटियों का प्रवाह आरंभ हो जाता है। उन्होंने कहा कि हमें हमारे चरित्र में इतना प्रभावशाली और संस्कारित होना चाहिए जिससे हमें देख कर हमारे छात्रों में राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व का जागरण हो। कार्यक्रम के प्रारंभ में संघ के शेखावाटी संभागप्रमुख खींवसिंह सुल्ताना ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में बताया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए सुमन कंवर सांडवा ने कहा कि हनुमान चालीसा में कहा गया है कि बल, बुद्धि, विद्या से ही हम समस्त कलह-विकारों से मुक्ति पा सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें सामूहिक रूप से वह बल, विद्या एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित बुद्धि प्रदान कर रहा है जो राष्ट्र निर्माण में अत्यंत आवश्यक है। इसलिए शिक्षकों को श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़कर राष्ट्र निर्माण के कार्यों में अपनी भागीदारी अवश्य निभानी चाहिए। बीकानेर संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने संभाग में होने वाले आगामी कार्यक्रमों और पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि शताब्दी वर्ष का मुख्य कार्यक्रम दिल्ली में होगा जिसके लिए बीकानेर से विशेष ट्रेन की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने अगले माह संघ के द्वितीय संघ प्रमुख नारायण सिंह जी की जयंती के उपलक्ष में आयोजित होने वाले पारिवारिक स्नेहमिलन की भी जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन बीकानेर प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर ने किया। कार्यक्रम की व्यवस्था में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के जिला प्रभारी नवीन सिंह भवाद, गजेंद्र सिंह लूंछ, तनवीर सिंह खारी, बलवंत सिंह महणसर, गौरव सिंह धन्देऊ आदि का सहयोग रहा।

माउंट आबू में मेजर शैतान सिंह की प्रतिमा का अनावरण

सिरोही जिले में माउंट आबू स्थित मेजर शैतान सिंह पार्क में 14 जून को परमवीर चक्र विजेता मेजर शैतान सिंह की प्रतिमा का अनावरण राज्यपाल कलराज मिश्र द्वारा किया गया। राज्यपाल मिश्र ने मेजर शैतान सिंह की वीरता, साहस और देश के लिए किए बलिदान को स्मरण करते हुए उनसे प्रेरणा लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर रेजांगला शौर्य स्मारक समिति के संरक्षक नरपत सिंह भाटी, अध्यक्ष सुनील आचार्य, देवी सिंह देवल, श्याम सिंह राजपुरोहित, तेज सिंह द्वारा तलवार व साफा भेंट कर राज्यपाल का अभिनंदन किया गया। नगरपालिका अध्यक्ष जीतू राणा सहित अनेकों अधिकारी, जनप्रतिनिधि व गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

मारवाड़ राजपूत सभा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का अभिनंदन

जोधपुर में पावटा बी रोड स्थित राजपूत सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में मारवाड़ राजपूत सभा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का अभिनंदन किया गया। इस दौरान पाबूजी राठौड़ की जन्मस्थली कोलू पाबूजी के निकट से गुजरने वाली जैसलमेर-लालगढ़-बीकानेर रेलगाड़ी का नाम केशर कालवी एक्सप्रेस रखने की मांग भी रखी गई। सभी ने इस मांग को केंद्र सरकार और रेल मंत्रालय तक पहुंचाने हेतु सहयोग करने का संकल्प व्यक्त किया। राव धांधलजी स्मृति समिति के अध्यक्ष विशाल सिंह आसोप अन्य पदाधिकारियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

वीर रामशाह तोमर और अन्य योद्धाओं को दी श्रद्धांजलि

श्री तंवरावाटी राजपूत सभा राजस्थान द्वारा श्री प्रताप छात्रावास नीमकाथाना में 18 जून को हल्दीघाटी के युद्ध में बलिदान देने वाले राजा रामशाह तोमर, उनके पुत्र व पौत्र की वीरता को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। हरी सिंह मंढोली ने बताया कि वीर राजा रामशाह तोमर ने अकबर और महाराणा प्रताप के बीच हुए हल्दीघाटी के युद्ध में अपने पुत्र, पौत्र और 400 तंवर योद्धाओं के साथ अकबर से लड़ते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया था। एक ही युद्ध में तीन-तीन पीढ़ियों द्वारा बलिदान होने की यह घटना इतिहास में अनूठी है। कार्यक्रम में प्रहलाद सिंह गांवड़ी, कैप्टन देवेंद्र सिंह कुरबड़ा, वीर चक्र जयराम सिंह डाबला, गिरवर सिंह भुदोली, सुमेर सिंह डाबला, विक्रम सिंह तंवर, सुदेश सिंह इमलोहा, लक्ष्यराज सिंह गणेश्वर, मिलन सिंह खादरा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

संपादकीय

नैरेटिव निर्माण की शक्ति और सत्य-साधना

वर्तमान में एक शब्द बड़ा प्रचलित हो रहा है - नैरेटिव। मूलतः अंग्रेजी भाषा का यह शब्द आजकल हिंदी भाषी लोगों द्वारा भी बहुतायत में प्रयोग किया जाता है, विशेषतः राजनैतिक संदर्भों में। किसी विषय, घटना, स्थान, समूह, व्यक्ति आदि से संबद्ध तथ्यों, तर्कों व प्रचलित अनुमानों के सामूहिक स्वरूप को नैरेटिव कहा जाता है। सरल शब्दों में, किसी विषय के संबंध में लोकमानस में प्रचलित और स्वीकृत धारणा ही नैरेटिव है। जनमानस में ये धारणाएं प्राकृतिक रूप से उनके अनुभवों के आधार पर प्रचलित होती रही हैं और उसी के अनुरूप नैरेटिव निर्मित होते रहे हैं। उदाहरणतः क्षत्रिय जाति ने निरंतर समाज और राष्ट्र पर होने वाले आक्रमणों के विरुद्ध जूझते हुए जो शौर्य दिखाया, उसी के परिणामस्वरूप एक योद्धा जाति के रूप में उसकी पहचान बनी। इस पहचान और उसके अनुरूप आचरण से लोकमानस में क्षत्रिय जाति के प्रति यह धारणा स्थायी बनी और उस धारणा को ही नैरेटिव कहा जा सकता है। क्षत्रिय जाति द्वारा इस संघर्ष की निरंतरता के कारण यह नैरेटिव इतना गहरा बना कि क्षत्रिय शब्द ही योद्धा का समानार्थी बन गया। इसी तरह से राम और कृष्ण जैसे अद्भुत एवं आदर्श व्यक्तित्वों का इस देश के जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उनके प्रति श्रद्धा, भक्ति और कृतज्ञता की भावनाओं ने उन्हें भगवान के रूप में स्थापित किया। उनकी महानता को नमन स्वरूप जो लिखित-अलिखित साहित्य रचा गया उससे ये धारणाएं अथवा नैरेटिव पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होकर स्थायी बनते रहे। नैरेटिव के स्वाभाविक स्वरूप और उसके निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए ऐसे ही अनेकों उदाहरण दिए जा सकते हैं। ये नैरेटिव अथवा जनमानस की धारणाएं बहुत शक्तिशाली होती हैं क्योंकि ये समाज की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज की सामूहिक चेतना को निर्मित और निर्देशित करने की इस क्षमता के कारण ही नैरेटिव के निर्माण की प्रक्रिया को तय करने वाले कारक सदैव से महत्त्वपूर्ण रहे हैं और इसीलिए समझदार समाजों में सदैव यह प्रयत्न किया गया कि समाज के श्रेष्ठतम लोगों का इन कारकों पर नियंत्रण रहे। भारतीय समाज में गुरुकुल व्यवस्था, वेद, उपनिषद जैसे साहित्य की रचना आदि ऐसे ही कारक थे।

किंतु, विगत कुछ सदियों में हुई तकनीकी और औद्योगिक क्रांति ने नैरेटिव निर्माण के इन कारकों और उन पर नियंत्रण करने वाले तत्वों को आमूलचूल रूप में परिवर्तित किया है। लोकतंत्र की व्यवस्था में अस्थाई जनमत के आधार पर सत्ता के केंद्रो पर अस्थाई पहुंच ने भी नैरेटिव निर्माण की प्रक्रिया को गहरे में प्रभावित किया है और सत्तालोलुप तत्वों द्वारा इस प्रक्रिया को हस्तगत करने और अपने स्वार्थों के अनुरूप झूठे नैरेटिव गढ़ने के प्रयत्न आज चरम पर हैं। आज स्थिति यह है कि संसार भर में विभाजनकारी शक्तियों द्वारा इस तरह के झूठे नैरेटिव फैलाकर विभिन्न स्तरों पर समाजों, राष्ट्रों और संस्कृतियों को खंडित किया जा रहा है। भारत में भी यह प्रक्रिया स्वतंत्रता से बहुत पूर्व ही प्रारंभ हो चुकी थी और आज की मूल्यहीन राजनीति में यह चरम पर पहुंच चुकी है। भारत में झूठे नैरेटिव के निर्माण की इस प्रक्रिया का सबसे बड़ा शिकार हमारा समाज हुआ क्योंकि देश की सत्ता पर कब्जा जमाने के इच्छुक तत्वों द्वारा अपने आप को स्थापित करने के लिए पूर्ववर्ती शासक के रूप में जनता के हृदय में हमारी श्रेष्ठ छवि का हनन करना ही एकमात्र उपाय था। आधुनिक युग में विचारों के प्रसार के साधनों पर अपने एकाधिकार के कारण वे कुछ सीमा तक इसमें सफल भी हुए और एक स्वाभिमानी और बलिदानी कौम की झूठी शोषणकारी छवि उनके द्वारा गढ़ी गई। राजनैतिक भाषणों, पत्र-पत्रिकाओं, सिनेमा, पुस्तकों जैसे अनेक माध्यमों से हमारे समाज के चरित्रहनन के प्रयत्न हुए और उसके द्वारा अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के प्रयास किए गए। ये प्रयत्न आज भी निरंतर जारी हैं। हमारे इतिहास को विकृत करने के लिए कहीं हमारे पूर्वजों की पहचान बदलने के प्रयास किए जा रहे हैं तो कहीं काल्पनिक पात्रों और कहानियों को गढ़कर हमें अत्याचारी बताने का प्रयास किया जा रहा है। इसलिए हमारे लिए यह विचारणीय है कि अपने स्वार्थों के अनुकूल नैरेटिव निर्माण करने के इस दौर में हम कहां खड़े है और इसके लिए हमारा क्या प्रत्युत्तर होना चाहिए।

उपरोक्त प्रश्न के उत्तर के दो पहलू हैं, जिन्हें हमें ठीक प्रकार से समझ लेना चाहिए। पहला - यह युग अथवा यह कालखंड विचार प्रधान है और विचारों के प्रसार के साधनों तक जिसकी जितनी अधिक पहुंच होगी उतनी ही नैरेटिव निर्माण की उसकी शक्ति अधिक होगी। हम आज इसमें पिछड़ रहे हैं। हमारे समाज के विरुद्ध हो रहे षड्यंत्रों और आक्रमणों को विफल करने के लिए यह युगानुकुल शक्ति हमें प्राप्त करनी ही होगी। क्षात्रधर्म पालन के लिए शक्ति का होना आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने अपने युग में उपलब्ध शक्ति के प्रत्येक स्वरूप की आराधना करके उसे प्राप्त किया और उसके द्वारा अपने स्वधर्म का, क्षात्रधर्म का पालन किया। इसलिए हमें भी नैरेटिव निर्माण की प्रक्रिया और साधनों तक अपनी पहुंच को सुदृढ़ करना होगा ताकि हम इसके द्वारा जनमानस के मार्गदर्शक बनकर अपना क्षात्रधर्म निभा सकें। दूसरा - अपने स्वार्थ अथवा मात्र सत्ताप्राप्ति के लिए झूठे नैरेटिव अथवा जनमत का निर्माण करने की दौड़ में शामिल होना आत्मघात की होड़ में शामिल होना है। यदि नैरेटिव निर्माण इस युग की बहुत बड़ी शक्ति है तो उस नैरेटिव को सत्य का आधार प्रदान करना उस शक्ति को सतोगुणीय स्वरूप प्रदान करना है। यदि शक्ति को सतोगुणीय नहीं बनाया जाए तो वह तामसिक बनकर स्वयं के साथ अपने धारक को भी नष्ट कर देती है। इसलिए नैरेटिव निर्माण की क्षमता प्राप्त करने के साथ-साथ, बल्कि उससे भी पूर्व सत्य-साधना में प्रवृत्त होना आवश्यक है। यह ठीक है कि झूठे नैरेटिव बनाकर निश्चित रूप से संसार पर विजय भी प्राप्त की जा सकती है लेकिन संसार को श्रेष्ठता के मार्ग पर अग्रसर करना उससे संभव नहीं है, वह तो केवल सत्य की शक्ति से ही संभव है और क्षात्रधर्म का उद्देश्य संसार को जीतना नहीं बल्कि पतन से उसकी रक्षा करके उसे विकास के मार्ग पर अग्रसर करना है। उपरोक्त वर्णित दोनों पहलुओं में से पहले की बात तो अधिकांशतया हमारे समाज में की जाती है लेकिन दूसरे पहलू पर पर्याप्त चिंतन न होने से बात एकपक्षीय हो जाती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन दोनों पहलुओं को समझकर उसी के अनुरूप सत्य-साधना करते हुए विचार-शक्ति के निर्माण में संलग्न है क्योंकि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य लोकसंग्रह का कार्य है जिसमें लोकमानस की वर्तमान धारणाओं और मूल्यों को परिष्कृत करना भी शामिल है। आएं, हम भी इस साधना में सहभागी बनें और सत्य की शक्ति से युक्त नैरेटिव निर्माण का मार्ग अपनाकर समाज की सामूहिक चेतना का दिशादर्शन करें।

मार्ग नहीं मंजिल है 'योग'

(अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के संदर्भ में विशेष)

भारतीय संस्कृति तथा उसकी धारणाओं का आदि काल से पोषक रहा योग आज विश्वपटल पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। कुछ वर्ष पहले ही भारत सरकार की सराहनीय पहल पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की है। भारतवर्ष में भी योग अपने नये रूप व अवधारणाओं में सामूहिक रूप से मनाया जाने लगा है। लेकिन भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा की गई सैकड़ों वर्षों की तपस्या के परिणाम स्वरूप ज्ञात 'योग' को अब एक छिछले, संकुचित या यूं कहे कि एक अत्यंत तुच्छ अर्थ में समेटने का प्रचलन बढता ही जा रहा है जो कि उसके मूल स्वरूप से सर्वथा भिन्न व अपर्याप्त है। ऐसा कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि मार्ग को ही मंजिल बताकर राही को गुमराह किया जा रहा है। शायद यह योग शब्द की व्युत्पत्ति व उसके शास्त्रों में किए गए प्रयोगों की जानकारी के अभाव में हो रहा हो, परन्तु इसके शनैः शनैः रूढ होने की प्रबल संभावना है और वह अर्थ इसके मूल स्वरूप के साथ अन्यायपूर्ण ही होगा।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा की ईयुजिर् धातु से हुई है जिसमें अनुबंध वर्णों का लोप हो जाने पर युज् शेष रहता है। जिसके व्याकरण सम्मत अर्थ होते हैं युज्-योजने (जोड़ना, मिलाना), युज्-संयमने (संयमित करना, साधना), युज्-समाधौ (समाधिस्थ होना, तल्लीन होना) आदि। युज् धातु से भाव अर्थ में 'भावे घञ्त्र सूत्र से घञ्त्र प्रत्यय अनुबंध लोप कुत्व गुणादि कार्य पद से स्वादि होने पर 'योगः' शब्द निष्पादित होता है। अतः प्रथमदृष्टया ही यह क्रिया है ही नहीं जिसको किया जा सके। यह भाव वाचक संज्ञा शब्द है जो उस भाव का बोध कराता है। शास्त्रों में योग शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है और ऐसा माना जाता है कि वेद अपौरुषेय है अतः यह कहा जा सकता है कि यह सृष्टि के आदि काल से ही विद्यमान रहा है। योग का आदि प्रोक्ता भगवान शंकर को माना जाता है। उन्होंने अपनी परम शक्ति से इस योग को अनुभूत किया तथा सच्चिदानंद स्वरूप के रुप में उद्धत किया।

भारतीय शास्त्रों में योग को आत्मा का परमात्मा से मिलन, जीव (मनुष्य) का ईश्वर से मिलन, पुरुष का प्रकृति से मिलन, शरीर में श्वास का नियंत्रण, इन्द्रियों का मन से तथा चित्त से वृत्तियों का निरोध आदि अनेक रुपों में उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि यह एक उच्च कोटि की स्थिति है। तब आधुनिक कथन 'योग भगाए रोग' या 'करो योग रहो नीरोग' आदि उस योग शब्द के अत्यंत संकुचित अर्थ को प्रकट करते हैं तथा आमजन में यह धारणा बलवती हो रही है कि जो कथित क्रियाएं हम कर रहे हैं यही भारतीय योग की उच्चतम स्थिति है तथा यह धारणा उन्हें योग की वास्तविक स्थिति से वंचित ही रखेगी।

हालांकि अष्टांग योग की क्रियाएं रोग भगाने में सक्षम है तथा आवश्यक भी है तथापि योग के मूल रूप से निम्नतर ही है। योग के अष्टांग की जानकारी होना जरूरी है अन्यथा लोग अंग को ही शरीर मान बैठते है।

ये अष्टांग हैं - 1 यम, 2 नियम, 3 आसन, 4 प्राणायाम, 5 प्रत्याहार, 6 धारणा, 7 ध्यान, 8 समाधि। अष्टांग योग को अनेक ऋषि मुनियों ने अपने ग्रन्थों व व्याखानों में अपने अनुभूत रूप में परिभाषित किया है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बड़ी सादड़ी में मनाया झाला मन्ना का 447वां बलिदान दिवस

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ जिले में बड़ी सादड़ी स्थित झाला मन्ना सर्किल पर 18 जून को झाला-मन्ना का बलिदान दिवस मनाया गया जिसमें समाजबंधुओ ने हल्दीघाटी युद्ध के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने झाला-मन्ना के बलिदान के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि स्वतंत्रता की लड़ाई में हम किधर खड़े हैं यह महत्वपूर्ण है, कितने बड़े हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है। 34 वर्ष के छोटे से जीवन काल में झाला मान ने अपने को अमर कर दिया। यदि झाला मान बलिदान न देते तो प्रताप नहीं होते, और यदि प्रताप नहीं होते तो क्या हम आज हल्दीघाटी युद्ध को याद कर पाते? उन्होंने बताया कि झाला मान का बलिदान समाज चरित्र का आदर्श उदाहरण है। जब राष्ट्र को जरूरत हो तो भगवान का दिया यह जीवन ही अर्पण कर दें, इससे बड़ा कोई त्याग हो नहीं सकता। ऐसे बलिदानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनकी तरह जीना आरंभ करें, हमारे इतिहास के प्रति जागरूक रहें, पूर्वजों द्वारा अपनाएं मूल्यों को आचरण में ढालें और पूज्य श्री तनसिंह जी के बताएं श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी मार्ग पर चलें। श्री प्रताप फाउंडेशन के नेतृत्व में तथा नगर पालिका बड़ी सादड़ी के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में प्रताप सिंह तलावदा ने हल्दीघाटी युद्ध के इतिहास के बारे में बताया एवं कहा कि यह युद्ध अन्याय के खिलाफ न्याय की लड़ाई थी। राव हनुमंत सिंह बोहेड़ा ने कहा कि बड़ी सादड़ी झाला मन्ना के कारण प्रसिद्ध है, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए हम आने वाले समय में इस दिवस को और अधिक भव्य रूप में मनाएं। कार्यक्रम में राज राणा घनश्याम सिंह तथा नगरपालिका अध्यक्ष विनोद कंठालिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कार्यक्रम का संचालन किया। उपस्थित समाजबंधुओं व नगरवासियों ने झाला मन्ना की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर हर्षवर्धन सिंह रूद, कान सिंह सुवावा, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप चौधरी, नगरपालिका उपाध्यक्ष मुस्तफा, बड़ी सादड़ी से भगवत सिंह, एडवोकेट गजेंद्र सिंह, रघुवीर सिंह, रणजीत सिंह, पारसोली से किशन सिंह, राजेंद्र सिंह, गणपत सिंह, तलावदा से चंद्रभान सिंह, हिम्मत सिंह, शंभू सिंह बाघेला, घनश्याम सिंह राठौड़ों का खेड़ा सहित कई गणमान्य नागरिक गण उपस्थित रहे। सभी उपस्थित जनों को स्वामी अड़गड़ानंद जी कृत यथार्थ गीता पुस्तक भेंट की गई।

संघशक्ति में अंतर्राष्ट्रीय भगवद् गीता सम्मेलन का आयोजन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन में अंतर्राष्ट्रीय भगवद् गीता सम्मेलन 25 जून से प्रारंभ हुआ। 1 जुलाई तक चलने वाले सात दिवसीय सम्मेलन में स्वामी प्रज्ञानंद सरस्वती जी द्वारा भगवद गीता पर प्रवचन किया गया। पहले दिन के प्रवचन में गीता के प्रथम तीन अध्याय की व्याख्या करते हुए स्वामी जी ने बताया कि गीता का ज्ञान, जाति, धर्म और देश के परे आत्म कल्याण की ओर ले जाने वाला है जिसे हम सभी को भली प्रकार समझकर आचरण में ढालना चाहिए। 26 जून को प्रवचन में बताया कि भगवान के प्रति हमारा भाव ही महत्वपूर्ण है। जैसा हमारा भाव दृढ़ होगा, वैसी ही हमारी परमात्मा की ओर लगन बढेगी। हमारा मन प्रमादी है, उसको जीतना कठिन है पर अभ्यास से इसे सम्भव बनाया जा सकता है। इस अवसर पर प्रतिदिन उपस्थित जनों को 'यथार्थगीता' पुस्तक का वितरण भी किया गया। इससे पूर्व 20 जून को सम्मेलन का पोस्टर विमोचन श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी व श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास की उपस्थिति में किया गया। इस दौरान झोटवाड़ा, खातीपुरा, रावणगेट, वैशालीनगर, सिविल लाइंस, अम्बावाडी, कालवाड़ रोड, सिरसी रोड, निवारू रोड आदि क्षेत्रों के पार्षद व जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

अवाय में हुआ सीमा सद्भाव सम्मेलन का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त जैसलमेर संभाग में रामदेवरा-नाचना प्रांत के अवाय गांव में 17 जून को सीमा सद्भाव सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय के जलदाय विभाग से सेवानिवृत होने के उपलक्ष्य में सेवानिवृत्ति समारोह के रूप में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि क्षत्रिय की समाज में भूमिका शरीर में हाथ की भूमिका के समान है। शरीर के किसी अंग पर आपदा आने पर हाथ सबसे पहले उसे बचाने पहुंचता है, वैसे ही समाज पर होने वाले आक्रमणों को रोकने का दायित्व क्षत्रिय का है। महन्त प्रतापपुरी ने कहा कि तनसिंह जी ने अपने जीवन में जो कर्म किए उसी कारण जनमानस में वे सबके प्रेरणास्रोत बन गए हैं। उन्होंने अपने जीवन से अपने जैसे अनेक व्यक्तियों का निर्माण किया। उन्होंने सिखाया की अपने कर्तव्य का पालन ही धर्म है, अतः हम सभी अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करें। मैराज सिंह साकड़ा ने गणपत सिंह अवाय द्वारा विभाग में सेवाकाल के दौरान किए कार्यों व लोगों के साथ किए गए व्यवहार की चर्चा करते हुए उन्हें आदर्श व्यक्तित्व का धनी बताया। गणपत सिंह अवाय ने कहा कि मुझे मेरे बाल्यकाल से ही मेरे दादाजी ने भक्तिभाव की ओर प्रेरित किया। उनके द्वारा सुनाए गए भजन मेरे लिए प्रेरणास्रोत बने। मैंने हमेशा सभी के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करने का प्रयास किया और मुझे भी परिवार, समाज व विभाग के साथियों से भरपूर प्रेम मिला। जैसलमेर संभागप्रमुख तारेंद्र सिंह झिनझिनयाली ने दिल्ली में आयोजित होने वाले पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का सभी को आमंत्रण दिया। कार्यक्रम को पूर्व विधायक सांग सिंह भाटी, डॉ मोहन सिंह बारु, ओम प्रकाश पुरोहित, लालदीन आकल का तला, सोना राम माली, सरपंच प्रतिनिधि अजयपालसिंह अवाय ने भी सम्बोधित किया। बीकानेर संभागप्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर, उत्तम सिंह बोड़ाना, प्रेम सिंह ताड़ाना, किशोर सिंह विरमदेवरा सहित अनेक जनप्रतिनिधि व गणमान्य नागरिक कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रांत प्रमुख अमर सिंह रामदेवरा ने किया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

10वीं और 12वीं की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समाज की प्रतिभाएं

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं और 12वीं की परीक्षाओं में 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले समाज के छात्र-छात्राओं के पाठकों द्वारा प्रेषित नाम, जो पिछले अंक में प्रकाशित नहीं हुए थे, यहां प्रकाशित किए जा रहे हैं। पथप्रेरक परिवार इन सभी को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

कक्षा-10वीं

क्र.सं.	नाम/पिता का नाम	निवास	प्राप्तांक
1.	चिल्लू सिंह पुत्र भोम सिंह	झंझेऊ (बीकानेर)	90.67 प्रतिशत
2.	गुनगुन राठौड़ पुत्री अमर सिंह	छोटी खाटू (नागौर)	95.83 प्रतिशत
3.	खुशी कंवर पुत्री धर्मपाल सिंह	नाथूसर (सीकर)	91 प्रतिशत
4.	परमवीर सिंह पुत्र ईश्वर सिंह	थल (सिरोही)	93.17 प्रतिशत
5.	युवराज सिंह पुत्र भगवान सिंह भायल	धीरा (बाड़मेर)	90.67 प्रतिशत
6.	रविंद्र सिंह पुत्र छोटू सिंह	धीरा (बाड़मेर)	92.83 प्रतिशत
7.	अक्षिता पुत्री बिरमदेव सिंह	बुटाटी (नागौर)	94.83 प्रतिशत
8.	वृजराज सिंह पुत्र मूल सिंह भाटी	फागलिया (बाड़मेर)	96.33 प्रतिशत

कक्षा-12वीं

क्र.सं.	नाम/पिता का नाम	निवास	प्राप्तांक
1.	निहारिका भाटी पुत्री हठे सिंह	ताणु रावजी	97.80 प्रतिशत (विज्ञान वर्ग)
2.	अंजली पुत्री बिरमदेव सिंह	बुटाटी (नागौर)	94.20 प्रतिशत (कला वर्ग)
3.	जनकराज सिंह पुत्र मूल सिंह भाटी	फागलिया (बाड़मेर)	95 प्रतिशत (विज्ञान वर्ग)
4.	अनिता कंवर पुत्री समंदर सिंह	पीलवा (जोधपुर)	95.60 प्रतिशत (कला वर्ग)
5.	भवानी सिंह पुत्र अनोपसिंह	पीलवा (जोधपुर)	90.20 प्रतिशत (कला वर्ग)
6.	राजेंद्र सिंह पुत्र लालसिंह	गोधन (नागौर)	93.20 प्रतिशत (कला वर्ग)
7.	मंजू कंवर पुत्री कालू सिंह	लोड़ता (जोधपुर)	91.40 प्रतिशत (विज्ञान वर्ग)

नीटः 2023 में सफलता प्राप्त करने वाली समाज की प्रतिभाएं

बाड़मेर जिले के ताणु रावजी निवासी निहारिका भाटी पुत्री हठे सिंह ने नीट 2023 परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 236वां स्थान प्राप्त किया। निहारिका ने इसी वर्ष बारहवीं कक्षा में 97.80 प्रतिशत अंक प्राप्त करके उदयपुर जिले में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया है। सीकर जिले के ठिमोली गांव निवासी आकांक्षा सिंह शेखावत पुत्री ओमपाल सिंह ने भी नीट 2023 परीक्षा में सफलता प्राप्त करते हुए अखिल भारतीय स्तर पर 2621वां स्थान प्राप्त किया है। जालौर जिले के कलापुरा गांव निवासी कीर्ति राठौड़ पुत्री माधु सिंह राठौड़ ने 3768वां स्थान प्राप्त किया। जालौर जिले के ही झाब गांव के निवासी शिवेन्द्र सिंह पुत्र गोपाल सिंह चौहान ने 9686वां स्थान प्राप्त किया है। बाड़मेर जिले के भुरटिया गांव के निवासी कृपाल सिंह पुत्र तेज सिंह ने ईडब्ल्यूएस श्रेणी में 7896वां स्थान प्राप्त किया। जोधपुर के लोड़ता गांव की निवासी चित्रांगदा राठौड़ पुत्री हुकम सिंह ने 16929वां स्थान प्राप्त किया है। झुंझनू जिले के मोहनवाड़ी गांव के प्रद्युमन सिंह पुत्र विश्वनाथ सिंह शेखावत ने 19897वां स्थान प्राप्त किया है। गुजरात के मेहसाणा जिले के गोरिसना गांव की निवासी पूजा बा रहेवर पुत्री पृथ्वी सिंह ने ईडब्ल्यूएस श्रेणी में 3865वां स्थान प्राप्त किया। पथप्रेरक परिवार इन सभी को बधाई प्रेषित करते हुए इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है। आदित्य प्रताप सिंह पुत्र अजयपाल सिंह, निवास - लसानी (राजसमंद) ने भी 23554वीं रैंक के साथ नीट परीक्षा पास की है।

जोधपुर व उत्तर गुजरात की संभागीय बैठक संपन्न

25 जून को उत्तर गुजरात संभाग की संभागीय कार्ययोजना बैठक पाटन के दान सिंह जी राजपूत छात्रावास में संपन्न हुई। संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाना ने पूज्य तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में होने वाले कार्यक्रमों की चर्चा की और कार्ययोजना बना कर दायित्व सौंपे। आने वाले समय में सभी प्रांतों में होने वाले शिविरों के बारे में भी चर्चा की गई। अरवली प्रांत, पाटन प्रांत, मेहसाणा प्रांत, पालनपुर प्रांत, थराद प्रांत और सिद्धपुर प्रांत के प्रांतप्रमुख सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। 25 जून को श्री क्षत्रिय युवक संघ के जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक स्थानीय कार्यालय तनायन में केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह सजियाली और संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक की उपस्थिति में संपन्न हुई। बैठक में पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के लक्ष्य निर्धारित कर उनके अनुरूप कार्ययोजना बनाई गई।

गुजरात में दस गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन

पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवंत सिंह पांची द्वारा 93 वर्ष की आयु में 93 गांव में संपर्क यात्रा करके पूज्य श्री के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने के संकल्प की अनुपालना में 24 जून को 10 गांवों में संपर्क किया गया। मोनपुर, पिपरिया, नवानिया, राजपुरा, जालिया, पाती, धामणका, रामपुरा, पीपली व वल्लभीपुर गांवों की इस यात्रा में बलवंत सिंह पांची के साथ मंगलसिंह धोलेरा, चंद्रसिंह खंढेरा और अजीतसिंह थलसर शामिल रहे। विक्रमसिंह धोलेरा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

(पृष्ठ चार का शेष)

मार्ग नहीं...

महान विचारक तनसिंह जी ने इसे अनुशासन का आधार बताया है तो श्री कृष्ण ने श्रीमद्भागवत गीता में इसका कई बार प्रयोग किया है, जिसमें कुछ निम्नानुसार है -

1 योगः कर्मसु कौशलम् 2 समत्वं योगः उच्यते
3 योगश्चितवृत्ति निरोधः 4 योगस्थ कुरु कर्माणि

अब वामपंथी विचारक जब यह लिखते है कि योग का धर्म से कोई सरोकार ही नहीं है, यह तो शरीर का विज्ञान है तो यह हास्यास्पद ही प्रतीत होता है जबकि यह पूर्णतया धार्मिक व शास्त्र प्रणीत स्थिति बोधक है। अतः कोई भी शारीरिक शिक्षक योग करवा सकता है, यह अवधारणा योग के संकुचित अर्थ को ही प्रतिपुष्टि प्रदान करती है। योग के मानव जीवन में महत्व व उच्चतम प्रभाव को देखते हुए विशेष पाठ्यक्रम व तदनुरूप शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए जिससे भारत पुनःविश्व गुरु पद को सुशोभित कर सकेगा।

नव्यव्याकरणाचार्यः अमर सिंह तंवर रामदेवरा

कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़ में संपर्क बैठकें संपन्न

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त 24 व 25 जून को हाड़ौती क्षेत्र के कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़ में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में संपर्क बैठकें आयोजित हुईं। कोटा में आशापुरा माताजी मंदिर में आयोजित बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने क्षत्रिय और शक्ति संचय, शक्ति और संगठन, त्याग व क्षत्रिय तथा आजीविका व क्षत्रिय आदि विषयों पर उपस्थित संभागियों से संवाद किया। बूंदी में महिपत सिंह जी के कार्यालय में बैठक आयोजित हुई। बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया गया तथा क्षत्रिय के चरित्र, सात्विक संगठन की आवश्यकता, इतिहास आदि विषयों पर चर्चा व संवाद हुआ। महेंद्र सिंह तारातरा, पृथ्वी सिंह गुड़ा, हिम्मत सिंह ने भी अपने विचार रखे। जिला प्रमुख चंद्रावती कंवर, पुलिस उपाधीक्षक ओमेंद्र सिंह आसलसर, ओमेंद्र सिंह प्रतापगढ़, हिम्मत सिंह ओंकारपुरा, पृथ्वी सिंह गुडा सहित अनेकों समाजबन्धु बैठक में उपस्थित रहे। बारां में मनिहारा तालाब, महादेव मंदिर परिसर में बैठक आयोजित हुई जिसमें राजपूत के रूप में हमारा व्यक्तित्व व चरित्र किस प्रकार का हो, श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली किस प्रकार ऐसे चरित्र का निर्माण करती है, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का उद्देश्य क्या है, आदि बिंदुओं पर विस्तार से उपस्थित संभागियों के साथ संवाद किया गया। पुलिस उपाधीक्षक गिरधर सिंह मुंगेरिया, पूर्व प्रधान शिवराज सिंह नागदा सहित अन्य समाजबन्धु बैठक में उपस्थित रहे। इसी प्रकार झालावाड़ स्थित श्री हरिश्चंद्र राजपूत छात्रावास में भी बैठक आयोजित हुई। रेवंत सिंह पाटोदा ने पूज्य तनसिंह जी रचित प्रार्थना 'क्षत्रिय कुल में प्रभु जन्म दिया' की पंक्तियों का भावार्थ बताते हुए कहा कि हमारी कौम में भगवान राम से लेकर आज तक प्रेरणा की लंबी श्रृंखला है। ये हमारे लिए गर्व का विषय है। इन महापुरुषों के जीवन-आदर्शों की ओर बढ़ने के लिए नियमित व निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। इसलिए नियमित शाखा व शिविरों में आना होगा। रजपूती और त्याग, हीरक जयंती व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य के बारे में चर्चा की गई। महेंद्र सिंह तारातरा, वीरेंद्र सिंह झाला, देवेंद्र सिंह बॉयत ने भी अपने विचार रखें। सभी बैठकों में दिल्ली में 28 जनवरी को होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी के जन्म शताब्दी समारोह की तैयारी को लेकर भी चर्चा हुई। लोकेंद्र सिंह बाढ़ापिचानोत व महेंद्र सिंह तारातरा अन्य सहयोगियों सहित सभी बैठकों में उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष)

धोलागिरी

लीलेरा

जैला

धौलपुर

पांच शिविर... शिविर के दौरान 18 जून को हल्दीघाटी शौर्य दिवस भी मनाया गया जिसमें नरेन्द्र सिंह गुडला, हरदयाल सिंह कुंचौली, रघुनाथ सिंह झालो का गुडा, कुलदीप सिंह ताल, बहादुर सिंह कालीवास आदि ने अपने विचार रखते हुए हल्दीघाटी युद्ध के वीर योद्धाओं को श्रद्धांजलि अर्पित की। बृजराज सिंह खारड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। दलपत सिंह गुडा केशर सिंह ने पूज्य तनसिंह जी की पुस्तक होनहार के खेल से 'चेतक की समाधि' प्रकरण का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन भंवर सिंह बेमला ने किया। उपस्थित समाजबंधुओं को दिल्ली में होने वाले पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह हेतु निमंत्रण दिया गया। चन्द्रभान सिंह झालो का गुडा, कुंजबिहारी सिंह बेरन,रघुनाथ सिंह झालो का गुडा आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। वागड प्रांत में सलूंबर क्षेत्र के धौलागिरी खेड़ा में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 16 जून तक आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि जिस प्रकार का जीवन हमने शिविर में जिया है, जैसी हमारी दिनचर्या और समय का प्रबंधन यहां रहा है, वैसा ही हमें अपने शिविर के बाहर के जीवन को भी बनाना है। इसके लिए शाखा और शिविर के माध्यम से निरंतर श्री क्षत्रिय युवक संघ से जुड़े रहें। शिविर में प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, उदयपुर, डूंगरपुर, सलूंबर आदि क्षेत्रों के 201 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। भंवर सिंह अखेपुर, राम सिंह व निर्भय सिंह धौलागिरी का खेड़ा, हरिश्चंद्र सिंह पायरा आदि ने स्थानीय समाजबंधुओं के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें वागड़ प्रांत प्रमुख टैंक बहादुर सिंह गेहूंवाड़ा ने सभी को पूज्य तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में जानकारी दी और मुख्य समारोह हेतु दिल्ली पधारने का निमंत्रण दिया। आश्रम के मठाधीश स्वामी जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि संस्कारों की आवश्यकता सभी को होती है। संस्कारवान व्यक्ति ही राष्ट्र और समाज की सेवा कर सकता है और कर्म योगी बनकर अपने जीवन को सफल कर सकता है। इसके पश्चात वागड़ प्रांत के सहयोगियों के साथ प्रांतीय कार्ययोजना बैठक भी आयोजित की गई जिसमें पूरे सत्र के लिए कार्ययोजना बनाकर सहयोगियों को दायित्व सौंपे गए। सिरोही जिले के जैला गांव में भी 15 से 18 जून तक शिविर आयोजित हुआ। महोब्बत सिंह धींगाणा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि आज के समय में सभी ओर अधिकार प्राप्त करने की ही बात हो रही है, कोई भी अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं दे रहा है। ऐसे विपरीत समय में संघ हमें अपने कर्त्तव्य की याद दिला रहा है और उसके पालन का मार्ग भी बता रहा है। इस मार्ग पर चलकर ही हम अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं। शिविर में जैला, लुणोल, सवराटा, सानवाड़ा, फलवदी, सरण का खेड़ा, टुआ, आकुना, मांडानी, केशुआ, वडवज, हमीरपुरा, पिथापुरा, पहाड़पुरा, थुम्बा, जोगावा, पांचोटा, गोलिया आदि गांवों के 85 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। सिरोही प्रान्त प्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। कान सिंह जैला, केशरसिंह जैला आदि ने ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था का दायित्व संभाला। पूर्वी राजस्थान संभाग में धौलपुर शहर में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 16 से 19 जून तक आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया ने शिविर का संचालन करते हुए कहा कि हमारे संस्कार ही हमारा व्यक्तित्व बनाते हैं। संघ हममें क्षत्रियोचित संस्कारों का विकास इन शिविरों के माध्यम से कर रहा है जिससे हम क्षत्रिय के रूप में अपने पूर्वजों की तरह समाज, राष्ट्र और मानवता की रक्षा का दायित्व निभा सकें। शिविर में जिले की बसेड़ी, बाड़ी, धौलपुर, राजाखेड़ा आदि तहसीलों से 91 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया।

समारोहपूर्वक...पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त मुंबई में गिरगांव चौपाटी पर तनेराज शाखा द्वारा भी हणवंत सिंह जी की सौवीं जयंती 18 जून को मनाई गई। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी ने जयंती के दिन अपना विडियो संदेश जारी कर महाराजा के कृतित्व व व्यक्तित्व को नमन किया।

कुसुमदेसर...पवन सिंह कुसुमदेसर ने लेफ्टिनेंट जनरल सगत सिंह राठौड़ का जीवन परिचय बताते हुए उनके जीवन के विभिन्न प्रसंग बताए। विधायक अभिनेश महर्षी, सरपंच अनिता कंवर, कांग्रेस नेता इंद्राज खींचड़, कल्याण सिंह शेखावत, मनीष शर्मा, रूकमानंद भींचर, जगजीत सिंह आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया। सगत सिंह के पुत्र सेवानिवृत्त कर्नल रणविजय सिंह, सरपंच फोरम के अध्यक्ष उम्मेद सिंह सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति इस दौरान उपस्थित रहे। कवि मनोज चारण ने कार्यक्रम का संचालन किया।

हालार की प्रांतीय कार्ययोजना बैठक संपन्न

गोहिलवाड-सौराष्ट्र संभाग में हालार प्रान्त की वार्षिक कार्ययोजना बैठक का आयोजन 25 जून को राजकोट में हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची, संभाग प्रमुख प्रवीण सिंह धोलेरा व प्रांतप्रमुख शक्तिसिंह कोटड़ा नायाणी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बैठक में जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाले कार्यक्रमों, प्रांत में लगने वाले शिविरों व शाखाओं पर चर्चा कर-के कार्ययोजना बनाई गई। उदयपुर-राजसमन्द प्रांत की प्रांतीय बैठक भूपाल नोबल्स संस्थान के ऑल्ड बॉयज भवन में 27 जून को आयोजित हुई। बैठक में बृजराज सिंह खारडा, भंवर सिंह बेमला, फतेह सिंह भटवाडा, भगत सिंह बेमला, नवल सिंह सापणी, हिम्मत सिंह कारोला सहित अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। प्रांत में शाखाओं का विस्तार, आगामी शिविर व जयन्तियां, संघशक्ति व पथप्रेरक सदस्यता, अलग-अलग गांवो में संपर्क बैठकों का आयोजन, पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी समारोह सहित अनेकों बिन्दुओं पर चर्चा हुई एवं तदनुरूप दायित्व सौंपे गए।

ओरण गोचर संरक्षण महाअभियान का पोस्टर विमोचन कार्यक्रम

मारवाड़ राजपूत सभा एवं राव धांधलजी स्मृति समिति के संयुक्त तत्वावधान में 16 जून को महंत प्रतापपुरी महाराज की उपस्थिति में आगामी 27 जून को कोलू पाबूजी में होने वाली ओरण गोचर महाआरती एवं परिक्रमा कार्यक्रम के प्रचार प्रसार हेतु कार्यक्रम का पोस्टर विमोचन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित पद्मश्री पूर्व सांसद डॉ नारायण सिंह माणकलाव एवं मारवाड़ राजपूत सभा अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व को रेखांकित करते हुए ओरण गोचर संरक्षण हेतु किए जा रहे इन प्रयासों की सराहना की। समिति के प्रचार मंत्री भवानी प्रताप सिंह चांदरख ने बताया कि जोधपुर शहर एवं आस पास के क्षेत्रों में ओरण गोचर आरती कार्यक्रम के प्रचार प्रसार हेतु टीम बनाकर भेजी जाएगी। इस दौरान मारवाड़ राजपूत सभा के महासचिव के वी सिंह चांदरख, सभा के अन्य पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे।

करण सिंह चावंडिया का देहावसान

करण सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **श्री करण सिंह जी चावंडिया** (खींवसर, नागौर) का देहावसान 25 जून 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोकाकुल परिजनों को संबल प्रदान करें। 1948 में कुचामन ओटीसी उनका पहला शिविर था। इन्होंने कुल 9 शिविर किए।

उण्डखा बंधुओं को पितृशोक

श्री केसर सिंह चौहान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक नरपत सिंह व राम सिंह उण्डखा के पिता **श्री केसर सिंह चौहान** का देहावसान 17 जून 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

सुधीर सिंह ठाकरियावास को मातृशोक

श्रीमती सुप्यार कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक एवं जयपुर प्रांत प्रमुख सुधीर सिंह ठाकरियावास की माता जी **श्रीमती सुप्यार कंवर** धर्मपत्नी श्री उम्मेद सिंह जी का देहावसान 23 जून 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

नवभारत समूह द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के पुणे प्रांत के प्रांतप्रमुख
श्री पवन सिंह बिखरणिया (फाउंडर व सीईओ, एस्सेंट) को
राजस्थान गौरव पुरस्कार
एवं श्री विक्रमादित्य सिंह चाडी (असिस्टेंट प्रोफेसर, लॉ डिपार्टमेंट, पुणे यूनिवर्सिटी)
को पुणे गौरव पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

शुभेच्छु:

मिठूसिंह काठाड़ी	देवी सिंह झलोड़ा	कल्याण सिंह सुरावा	नेपालसिंह गोळा	श्रवण सिंह सिवाना	नटवर सिंह रेवत
बाबूसिंह केशवना	समुंदर सिंह चांदेसरा	कर्ण सिंह मूठली	गोविंद सिंह कतरासन	लीलू सिंह सुल्ताना	भोम सिंह तिबनीयार
मूल सिंह काठाड़ी	नेपाल सिंह जाखड़ी	परबत सिंह नेवाई	देवी सिंह डाबड़	रणजीत सिंह चौक	जगमाल सिंह विशाला
स्वरूप सिंह नवातला	रघुनाथसिंह बैण्याकाबास	राजेन्द्र सिंह मीठडी बाड़मेर	लोकेंद्रपाल सिंह बीजापुर		

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org